Journal *de* Brahmavart
Volume one ,Issue one
ISSN 2394- 6326

Quarterly Published by
Brahmavart Research Institute
7A/1 Aman Patel Complex
Vishnupuri Kanpur U.P. India

ck) n'ku dh ikphurk

डॉ.वेद भाष्कर दीक्षित
प्रोफ़ेसर वी.एस.एस.डी.कॉलेज कानपुर

अनेक विद्वानों के मतानुसार बौद्ध दर्शन का प्रादुर्भाव भारतीय दर्शन पद्धति में सांख्य एवं योग के अन्तर्गत ही हुआ, क्योंकि महात्मा बुद्ध के जीवन में योग का वर्णन स्पष्ट मिलता है। किन्तु अन्य विचारकों का मत है कि सांख्य योग सम्बन्धी विचार बौद्ध से पूर्व ही परम्परा से समाज में इतस्ततः बिखरे हुए उपलब्ध थे। किन्तु उनका ग्रन्थ रूप में संकलन एवं वैज्ञानिक पद्धति से प्रतिपादन महात्मा बुद्ध के बाद ही हुआ है।[1]

महात्मा बुद्ध से पहले भारत में तीन ही दार्शनिक पद्धतियों का प्रचलन युक्ति से सिद्ध माना जा सकता है। iFke dksdk.M की पद्धति जिसमें मनुष्य की कामनानुसार विविधि योगों का प्रतिपादन था। f}rh; mifu"knk की ब्रह्मविद्या जिसके अनुसार केवल ब्रह्म को ही वस्तु तथा अन्य सभी को अवस्तु घोषित किया गया था। rhljh ykdk;r (चार्वाक) पद्धति या उनसे मिलती–जुलती आजीवकों के विचार, जिनका काल, सिद्धान्त, स्वभाव, नियति और कोई यदृच्छा (आकस्मिक) को ही सबका कारण मानते थे। मनुष्य अपने पुण्य–पापों का कर्ता या भोक्ता कुछ नहीं, यों ही नियतिवश यह सब कुछ चलता आया है। यह लोकायतिक धारणा प्रचलित थी।[2]ये काल, स्वभाव और नियति के सिद्धान्त इतने प्रचलित थे कि श्वेताश्वतरोपनिषद[3] में भी इनका वर्णन उपलब्ध होता है। इन तीनों पद्धतियों के प्रचार के कारण दर्शनों के विकास का द्वार बन्द सा था। जब दर्शनों से प्रतिपाद रहस्य

---

1 एस. एन. दासगुप्ता, पृ0 सं0 78–79

2 तत्रैव भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास– डा0 नरेन्द्र देव, डा0 हरिदत्त शास्त्री प्रकाशक साहित्य भण्डार, मेरठ–1973, पृ0 99

3 श्वेताश्वरोपनिषद्– भगवद्पुराण– पृ0सं0 20–24

एक प्रकार कसे हस्तगत हो चुका या उसके विषय में चरम सिद्धान्त मिल गये तब विचारकों की तर्कशक्ति सुप्तप्राय हो गयी थी और उन्होंने किसी भी पद्धति की तर्क से परीक्षा नहीं की। सभी पद्धतियों को सम्भवतः आप्तोपदेश समझ लिया गया। इस अवस्था में दार्शनिक सिद्धान्तों को नवीन दिशा देने के लिए एक प्रबुद्ध विचारक की आवश्यकता थी। महात्मा बुद्ध के आविर्भाव से यह कमी पूरी हो सकी है।

egkRek c) dk thou pfj=

महात्मा बुद्ध या गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से पूर्व छठी शती में नेपाल की घनी उपत्यका में स्थित कपिलवस्तु की प्राचीन नगरी के निकट लुम्बिनी उद्यान में हुआ था। शाक्याधिप महाराज शुद्धोधन उनके पिता और महारानी महामाया उनकी माता थी। दन्त कथाओं के अनुसार यह कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध के विषय में यह भविष्यवाणी थी कि उन्हें निर्बल वृद्ध, शव तथा भिक्षु को देखते ही वैराग्य हो जायेगा और सब कुछ त्याग कर भिक्षु बन जायेंगे। पिता इस भविष्यवाणी के डर से सिद्धार्थ को इनके दर्शनमात्र से बचाने का पूर्ण यत्न करते थे। इसीलिए उन्होंने अपने पुत्र का शीघ्र ही विवाह करके उसको भोग विलासों के उपकरणों में घेर रखने का आयोजन किया। परन्तु भावी अपने हाथ की चीज कहाँ? एक दिन महल से भ्रमण को निकलते हुए सिद्धार्थ ने मार्ग में एक–एक करके, जराजीर्ण, रोगातुर, शव तथा भिक्षु चारों को देख ही तो लिया। सारथि से उनके विषय में पूछतांछ की, उन्होंने तत्क्षण ही सांसारिक वस्तुओं की क्षणभंगुरता निश्चय करके घरबार सबकुछ त्यागकर नश्वरता को नाश करके अमरता के उपाय ढूंढ निकालने के लिए संकल्प कर लिया। उन्नीस वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने सर्वत्र त्याग करके घर से महानिष्क्रमण किया।

उसके अनन्तर राजगिरि (राजगृह) राजधानी तक पैदल यात्रा की। वहाँ से उवेला पहुँचे। वहाँ उन्होंने पांच अन्य भिक्षुओं के साथ अपने को कठोर नियम, संयम की यंत्रणाओं के हवाले करके इतनी घोर तपस्या की, कि अत्यन्त क्षीण होकर एक बार वे मृतकल्पमूर्छा से ग्रस्त होकर गिर पड़े। लोगों ने समझा कि वे सचमुच मर गये। इस घटना के छः वर्ष बाद उन्हें विश्वास हो गया कि यह तपश्चरण केवल एक ढोंग है। इससे कुछ हाथ न आवेगा। अनन्तर सिद्धार्थ ^ukRekueolkn;r* के अनुसार तपश्चरण को तिलांजलि देकर सत्य के अनुसंधान में तत्पर हो गये। कुछ साल पश्चात् उन्होंने सत्य एवं शुद्ध बोध को प्राप्त किया। तभी से उनका नाम महात्मा बुद्ध प्रसिद्ध हुआ। इसके पूर्व उनका पितृ–प्रदत्त नाम सिद्धार्थ था। इस बुद्धत्व प्राप्ति के लगभग पैंतालिस वर्ष तक उन्होंने इधर–उधर घूमकर लोगों को अपने अन्वेषित सत्य का उपदेश दिया।

अस्सी वर्ष के कुछ ऊपर जाने के पश्चात् महात्मा बुद्ध को आभास हुआ कि अब उनका अन्तिम समय समीप आ गया। तब उन्होंने ध्यान के अनुष्ठान को अपनाकर क्रमशः ध्यान की अग्रिम सीढ़ियों पर सफलता से चढ़ते हुए निर्वाण प्राप्त किया।

अग्रिम शताब्दियों में इनके उपदेश–सूत्रों का विकास भारत, तिब्बत, चीन आदि देशों में जितना पल्लवित हुआ उसका अभी तक अमूल चूल अध्ययन आज भी असम्भव ही है। इतना ही नहीं अभी वर्षों लग जायेंगे कि जब बौद्ध दर्शनों के अध्ययन के लिये महत्वाकांक्षी अनुसंधायक अविरल सामग्री का संकलन करने में समर्थ हो पायेंगे। जो कुछ भी अभी तक प्राप्त है उसके आधार पर इतना तो निःसन्देह कहा जा सकता है कि बुद्ध दर्शन मानवीय मस्तिष्क की अति सूक्ष्म एवं आश्चर्यकारिणी उपज है। भारतीय दर्शन संस्कृति और सभ्यता के उत्कर्ष एवं श्री–वृद्धि के लिये बुद्ध के लिये बुद्ध और उनके अनुयायियों ने जो सदियों तक योगदान दिया है उससे ऊऋण होना असम्भव है। अतः बौद्ध दर्शन का भारतीय दर्शनों में एक विशिष्ट स्थान है।

f=fiVd& बौद्ध साहित्य के मूल ग्रन्थ, जिनमें बौद्ध दर्शन के उद्‌गार संचित हैं, पाली में उपलब्ध होते हैं। ये मूल पालिग्रन्थ तीन भिन्न प्रकार के संग्रह हैं, जिन्हें 1. सुत्त 2. विनय और 3. अभिधम्म पिटक कहते हैं। पिटक अर्थ पिटारे या संग्रह हैं इन तीनों पिटकों का समाहार त्रिपिटक कहलाता है।

इनमें से सुत्त पिटक में बौद्धों के सिद्धान्त सूत्र ग्रन्थित हैं। विनय पिटक में बौद्ध भिक्षुओं के संयम–नियम और अभिधम्म–पिटक में प्रायः उपर्युक्त विषयों का ही विद्वतापूर्ण परिभाषिक रूप में वर्णन प्राप्त होता है।

f=fiVd dk dky fu.k;& बौद्धशास्त्र के अनुशीलनकर्ताओं ने आज तक अथक परिश्रम के अनन्तर भी इन त्रिपिटकों की रचना और उनके संकलन के काल–विषयक निर्णय में अपना कोई मत स्थिर नहीं कर पाया। हाँ, सुत्त पिटक और विनय पिटकों की रचना अभिधम्म पिटक की रचना से पूर्व अवश्य हो चुकी होगी अन्यथा उनमें दोनों के विषयों का विशद एवं विद्युतापूर्ण विवरण उपलब्ध न होता। इसके साथ इतना भी किसी हद तक निश्चित ही है कि ईसा से 241 वर्ष पूर्व सम्राट अशोक के विषय में जब बौद्ध संघ की पहली बैठक हुई थी तब तक ये सभी बौद्ध शास्त्रीय रचनायें पूर्ण हो चुकी थी।

इनमें सुत्त पिटक दार्शनिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। अभिधम्म पिटक में प्रायः उन्हीं सिद्धान्तों की व्याख्या है जो सुत्त पिटक में संग्रहीत है। बुद्ध घोष vRFk'kkfyuh[1] के उपोद्‌गात से स्पष्ट संकेत करता है कि वह (अभि अर्थात् धम्म अर्थात् सिद्धान्त) सुत्त पिटक के सिद्धान्तानुरूप गहन एवं विशिष्ट (धम्मातिरेक एवं धम्मविशेषत्येन) व्याख्या है। बुद्ध घोष के अनुसार सुत्त ज्ञान से समाधि और अभिधम्म से चातुर्य पण्णासम्पदम् की प्राप्ति होती है। इसका तात्पर्य यही है कि सुत्तगत संलापो का पाठक के मस्तिष्क शोधक पर प्रभाव पड़ता है और अभिधम्म के अध्ययन से उन सिद्धान्तों के समर्थन, तर्क एवं युक्तियों का ज्ञान हो जाता है जिससे कि पाठक दुःख विमुक्ति के पथ पर चलने के लिए अपनी अस्था दृढ़ करने

---

[1] अत्थशालिनी– पृ0 सं0 112

में तत्पर होता है। अभिधम्म के कथावस्तु की अपनी एक विशेषता यह है कि उसमें विरोधी सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है। इसमें प्रश्नोत्तरों की उद्‌भावना करके विपक्षी के उत्तरों में पूर्वापर में परस्पर विरोध का निर्देश किया गया है।

सुत्त–पिटक में पांच निकाय हैं। ये पांच निकाय निम्नलिखित नामों से पुकारे जाते हैं– 1. दीर्घ निकाय, 2. भज्झिम निकाय, 3. संयुक्त निकाय, 4. अंगुत्तर निकाय और 5. खुद्‌क निकाय।

इनमें से दीर्घ निकाय और भज्झिम नाम उनमें आये हुए सूत्रों की लम्बाई पर आधारित होने से दीर्घ में अधिक लम्बे और भज्झिम में प्रायः मध्यम सूत्र वर्णित हैं। संयुक्त निकाय के नामकरण का कारण उनका संघ की विशेष बैठकों में संकलित होने से पड़ा। ये सूत्र बौद्ध विशिष्टि विद्वानों की बैठक (संयोग) में संकलित हुए थे। इसलिए उन संयोग सम्मेलनों की स्मृति को अक्षुण रखने के लिए यह नाम दिया गया था। अगुन्तर निकाय के नामकरण का कारण यह है कि इसके अन्तर्गत अध्यायों में एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे इस क्रम के विचार–विमर्श बढ़ाये गये। खुद्‌दक निकाय में छोटे पूरे अनेक प्रकरण हैं। ये प्रकरण 15 हैं– 1. खुद्‌दक पाठ, 2. धम्मपद, 3. उदान, 4. इतिवत्क, 5. सुत्त निपात 6. विमानवत्थु, 7. पेतवत्थु, 8. थेरगथा 9. थेरगाथा, 10. जातक, 11. निदेस, 12. पंटिसंभिदाभग्ग, 13. अपदान, 14. बुद्धवंस और 15. चर्थापिटक।

अधिधम्म के अन्तर्गत सात संग्रह हैं– 1. धम्मसंगनी, 2. पट्‌टान, 3. धातु कथा, 4. युग्गलपंचान्ति, 5. विभंग, 6. यमक और 7. कथावत्थु। इन संग्रहों के अधिकांश भागों पर 'आत्मकथा' नाम से प्रसिद्ध टीका भी उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त मिलिन्द पण्ह (मिलिन्द प्रश्न) नामक राजा मिलिन्द के प्रश्नों के संग्रह भी दर्शन अध्ययनार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। परन्तु इस ग्रन्थ के प्रादुर्भाव का समय सर्वथा अज्ञात है।

संक्षेप में बौद्ध दर्शन की सामग्री इन्हीं प्राचीन ग्रन्थों में मिलती है। ये मूल ग्रन्थ तत्कालीन लोक भाषा पाली में उपलब्ध होते हैं। आगे चलकर बौद्ध आचार्यों ने विविध संस्कृत ग्रन्थ भी लिखे हैं। ये ग्रन्थ अत्यधिक पाण्डित्यपूर्ण हैं। हिन्दू दर्शनकार की रचनाओं में प्रायः इन अर्वाचीन संस्कृत ग्रन्थों से ही बौद्ध दर्शनों सिद्धान्तों को उद्‌घृत किया गया है। संस्कृत के पण्डित हिन्दू दार्शनिकों ने इस प्राचीन पालि साहित्य को शायद कभी नहीं पढ़ा इसलिए षड़दर्शनों पर रचे हुए ग्रन्थों में इनके उद्धरणों का अभाव दृष्टिगोचर होता है। आश्चर्य नहीं कि यदि उत्तरकालीन बौद्ध विद्वान संस्कृत में लिखने के लिए कलम न उठाते तो उनके दर्शन पण्डितों को अज्ञात ही रह जाते। संस्कृत वालों में लोकभाषा की अवहेलना बहुत प्राचीन काल में चली आ रही प्रतीत होती है।

Fkjokn& यहाँ इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि इन ग्रन्थों में संग्रहीत आचार–विचारों के सिद्धान्त 'थेरवाद' के नाम से प्रसिद्ध हैं। 'थेरवाद' संस्कृत के 'स्थविरवाद'

का रूपान्तर है। उनका अर्थ बुद्ध लोगों के सिद्धान्त है ये विचार बौद्धों की पहली संघ बैठक में ही संग्रहीत हो चुके थे।

संस्कृत–प्रतिपादित उत्तरकालीन सिद्धान्तों ने जब महायान शाखा की प्रतिष्ठापना की तो यही 'थेरवाद' हीनयान के नाम से प्रचलित हुआ। ऊपर केवल थेरवाद के ही आकर ग्रन्थों का परिचय दिया है। ये पालिग्रन्थ और उसका अध्ययनाध्यापन क्रमशः क्षीण होता गया और 'विसुद्धि मण्ग' के लेखक तथा 'दीघ निकाय एवं धम्म संगणी आदि के टीकाकार बुद्धघोष के इस पालिसाहित्य का विकास ईश्वीय 400 के बाद एक दम अवरूद्ध हो गया।

संस्कृत के ग्रन्थों का प्रणयन और प्रसार के आविर्भाव से ही बौद्धों की महायान शाखा हुई जिसने बौद्ध दार्शनिकों को योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक और माध्यमिक शाखाओं में विभाजित किया।